IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजस्थान में संस्कृतिकरण और सामाजिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Sanskritisation and Social Change in Rajasthan: A Sociological Study

मीना देवी

सहायक आचार्य समाजशास्त्र

(विद्या संबल योजना)

राजकीय कन्या महाविद्यालय

अजीतगढ़, नीमकाथाना, (राजस्थान)

शोध सारांश

संस्कृतीकरण भारतीय समाज की एक अनुपम प्रक्रिया है जिसका सम्बन्ध जातिप्रथा से है। यह प्राचीनकाल से हो रही एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से निम्न जातियाँ अपने रीति– रिवाज और कर्मकाण्ड छोड़कर उच्च जातियों के रीति–रिवाज व कर्मकाण्ड अपना लेती हैं और परम्परा से जो स्थान उन्हें मिला हुआ है उससे ऊँचे स्थान का दावा करने लगती हैं। यह भारतीय समाज की एक आन्तरिक प्रक्रिया है। संस्कृतीकरण सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया है जो भारत के विभिन्न भागों में हिन्दुओं तथा भील और ओराँव जैसी जनजातियों में व्यापक रूप से पायी जाती है। संस्कृतीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा निम्न जातियाँ तथा जनजातियाँ अपने से उच्च जातियों का अनुकरण करके अपना सामाजिक स्तर ऊँचा करने का दावा करती हैं। राजस्थान, भारतीय उपमहाद्वीप का एक प्रमुख राज्य, अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की समजिक संरचनाएं, परंपराएँ और सांस्कृतिक मान्यताएँ प्राचीन काल से प्रभावी रही हैं। 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजस्थान में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं, जिनका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

शब्द कुजी : संस्कृतीकरण, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक, संस्कृति, शिक्षा, प्रवृत्तियाँ।

प्रस्तावना :

संस्कृतीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई 'निम्न' हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा अन्य समूह, किसी उच्च और प्रायः 'द्विज' जाति की दिशा में अपने रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और जीवन–प्रणाली को बदलता है। निम्न जाति को ऊँचे स्थान का दावा बहुत दिनों तक तथा कई बार एक–दो पीढ़ियों तक करना पड़ता है, तब जाकर उसे ऊँचे स्थान की स्वीकृति मिल पाती है। कभी–कभी तो अनेक जातियाँ ऐसे स्थानों का दावा करने लगती हैं जो पड़ौसी जातियाँ उन्हें देने को तैयार नहीं है। संस्कृतिकरण सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह समाजों में बदलाव लाने का एक प्रभावी तरीका है, जो संस्कृति, जीवनशैली, और विचारधारा में नवाचार और समायोजन को बढ़ावा देता है।

अध्ययन के उदेद्श्य

- संस्कृतीकरण को प्रोत्साहित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- राजस्थान में संस्कृतिकरण और सामाजिक परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन करना।
- राजस्थान में संस्कृतिकरण और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का विश्लेषण करना।
- सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव को समझना और सांस्कृतिक नवाचारों तथा सामाजिक सुधारों को विश्लेषित करना है।

शोध विधि व आंकड़ों का संग्रहण

राजस्थान में संस्कृतिकरण और सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक आंकडों को लिया गया है। आंकडों को एकत्रित करने के लिए समाचार पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं, जर्नल आदि का उपयोग किया गया है।

परिचय

संस्कृतिकरण (Culturalization) को समाजों में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें व्यक्ति या समाज के विभिन्न सदस्य, परंपराओं, आदर्शों, भाषा, और जीवनशैली को एक दूसरे से आत्मसात करते हैं। यह प्रक्रिया समाज में बदलावों का कारण बन सकती है, जो समाज के मूल्यों, दृष्टिकोणों और जीवनशैली में बदलाव लाती है। यह लेख संस्कृतिकरण के सिद्धांतों और समाज पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करता है, तथा यह समझने का प्रयास करता है कि यह प्रक्रिया सामाजिक परिवर्तन के मार्गदर्शन के रूप में कार्य करती है। राजस्थान की समाजिक संरचना विशेष रूप से जातिवाद, वर्गभेद और पारंपरिक परंपराओं से प्रभावित रही है। यह राज्य भारतीय समाज के प्रमुख हिस्सों में से एक है, जहाँ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक बदलावों की लंबी परंपरा रही है। समय के साथ, समाज में कई तरह के बदलाव हुए हैं, जिनमें विशेष रूप से महिलाओं की स्थिति, शिक्षा, और आर्थिक विकास शामिल हैं। 21वीं शताब्दी में राज्य के भीतर संसाधनों और अवसरों में बदलाव के कारण समाज में कई सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तनों का सामना किया गया है।

संस्कृतीकरण की विशेषताएँ

संस्कृतीकरण की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- **संस्कृतीकरण सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है–**यह सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा निम्न जाति किसी उच्च जाति के रीति–रिवाजों का अनुकरण करती है और अपनी स्थिति को ऊँचा करने का प्रयास करती है। अतः यह सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है।
- **जातीय संस्तरण में उच्च स्थिति का दावा–**इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य होता है कि निम्न जाति उच्च जाति की तरहं अपने को बदलकर उच्च स्थिति का दावा करे। उच्च नातियों के जीवन पद्धति की नकल इसी उद्देश्य से की जाती है।
- **व्यक्तिगत प्रक्रिया का न होना–**संस्कृतीकरण व्यक्तिगत प्रक्रिया न होकर सामूहिक प्रक्रिया है। इसमें जाति के एक–दो या कुछ ही व्यक्ति मिलकर उच्च स्थिति पर जाने का प्रयास नहीं करते बल्कि सम्पूर्ण जाति ही उच्च स्थिति पर पहुँचने के लिए सामूहिक प्रयास करती है।
- **उच्च स्थिति का माध्यम–**संस्कृतीकरण एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति से उच्च स्थिति को पाने का प्रयास करता है। अतः संस्कृतीकरण उच्च स्थिति का माध्यम भी है। संस्कृतीकरण

में व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट नहीं होता है। अतः वह अपने से उच्च वर्गों के व्यवहारों, आचरणों, आदर्शों तथा आदतों का अनुकरण करता है।

संस्कृतीकरण को प्रोत्साहित करने वाले कारक

समाज में संस्कृतीकरण को प्रोत्साहित करने वाले अनेक कारक हैं–

आधुनिक शिक्षा –यह आधुनिक शिक्षा का ही परिणाम है कि आज समाज के लोग यह जान गये हैं कि समाज में उच्च स्थिति या पद प्राप्त करने के लिए जातीय नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं है, बल्कि शिक्षा के आधार पर जातिगत कुशलता या गुणों में वृद्धि करना आवश्यक है। समानता व प्रजातान्त्रिक मूल्यों की लोकप्रियता का आधार भी शिक्षा का अत्यधिक प्रसार है। अतः संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को बल मिला।

यातायात व संचार के साधनों का विकास –यातायात व संचार के साधनों को प्रगति ने भी संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण बनाया है। शिक्षित, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले, स्वतन्त्रता व समानता के विचारों वाले, प्रभावशाली एवं नगरीय व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर परस्पर लोगों में संस्कृति का आदान–प्रदान होना सम्भव विभिन्न प्रकार के जाति, धर्म, प्रदेश के लोगों का पारस्परिक सम्पर्क और विचार विनिमय बढ़त जा रहा है परिणामस्वरूप संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को बल मिला।

पश्चिमीकरण की प्रक्रिया –पाश्चात्य संस्कृति व सभ्यता के प्रभाव ने पश्चिम के जीवन के आदशों को आत्मसात करने की ओर भारतवासियों को प्रेरित किया है। इसने नवीन जीवन के मूल्यों के के प्रति आकर्षण, विभिन्न जातियों में परस्पर दूरी में कमी एवं सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि को प्रोत्साहित किया है। साथ ही लोग सामाजिक स्तर एवं रहन–सहन के स्तर में सुधार करने में भी सफल हुए हैं।

सामाजिक अधिनियम –कुछ सामाजिक अधिनियम भी संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को बल देने में सहायक रहे हैं। जैसे अस्पृश्यता अपराध अधिनियम, 1955 जिसके द्वारा अस्पृश्यता को समाप्त किया गया और किसी भी प्रकार के भेदभाव, छुआछूत पर प्रतिबन्ध या रोक लगा दी गयी। विशेष विवाह अधिनियम, 1954 ने अन्तर्जातीय विवाह को मान्यता प्रदान को अर्थात् विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध को भी कानूनी आधार पर समाप्त कर दिया गया, आदि। इस प्रकार विभिन्न कानूनों ने भी संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को सरल बनाने में सहायता प्रदान की है।

सामाजिक कारक –संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को बल प्रदान करने में सामाजिक चेतना या जागृति, जीवन पद्धतियाँ, धर्म, सामाजिक स्थिति की विभिन्नताओं के प्रति आकर्षण, समतावादी प्रवृत्तियाँ एवं समाज सुधारकों के प्रयासों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सामाजिक तथा धार्मिक आन्दोलन कुछ प्रमुख सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलनों की भी संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने में भूमिका रही है। जैसे भक्ति आन्दोलन, गाँधीजी का हरिजन आन्दोलन, बंगाल का ब्रह्म समाज, बम्बई का प्रार्थना समाज तथा पंजाब व उत्तरप्रदेश में आर्यसमाज एवं राधास्वामी आदि सम्प्रदायों व आन्दोलनों ने जातिगत भेदभावों को दूर करने में एवं निम्न जातियों की स्थिति में सुधार करने के प्रयत्न किये हैं जिनसे संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को बल मिला है।

संस्कृतिकरण के माध्यम

संस्कृतिकरण विभिन्न माध्यमों से हो सकता है, जिनमें शामिल हैं

शिक्षा और संवाद शिक्षा के माध्यम से समाज में संस्कृतिकरण का प्रभाव बढ़ सकता है। जब लोग नई शिक्षा प्राप्त करते हैं, तो वे अन्य संस्कृतियों के प्रति संवेदनशील होते हैं और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में भाग लेते हैं।

मीडिया और प्रौद्योगिकी आधुनिक मीडिया, इंटरनेट, और सोशल मीडिया के माध्यम से संस्कृतिकरण की प्रक्रिया तेज़ी से बढ़ी है। विभिन्न देशों के लोग आपस में संवाद करते हैं, और एक–दूसरे की संस्कृति को अपनाते हैं। इससे वैश्विक संस्कृति का निर्माण होता है।

आधुनिकता और वैश्वीकरण वैश्वीकरण और आधुनिकता ने संस्कृतिकरण के प्रभाव को और भी बढ़ा दिया है। यह दोनों तत्व समाजों को एक–दूसरे से जोड़ते हैं और नए सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देते हैं।

राजस्थान में संस्कृतिकरण

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में भारतीय और वैश्विक संस्कृतियों के बीच एक संवाद होता है। राजस्थान में यह प्रक्रिया विशेष रूप से बाहरी सांस्कृतिक प्रभावों, जैसे कि औपनिवेशिक शासन, और अब वैश्वीकरण, के कारण तेज़ हुई है। पारंपरिक नृत्य, संगीत, कला, और रीति–रिवाजों में अब आधुनिकता का समावेश हो गया है। महिलाओं की स्थिति में भी बदलाव आया है, और वे अब शिक्षा, राजनीति, और व्यवसाय में अधिक भागीदार बन रही हैं। राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में सांस्कृतिक और पारंपरिक रीति–रिवाजों को संरक्षित रखने की कोशिशें भी जारी हैं, लेकिन साथ ही उनमें सुधार और नवाचार की दिशा में भी काम हो रहा है। विशेष रूप से, महिलाएं अब पारंपरिक कार्यों जैसे कि कालबेलिया नृत्य, राजस्थानी कला, और हस्तशिल्प में भागीदारी के अलावा, शिक्षा और नौकरी में भी भाग ले रही हैं।

संस्कृतिकरण के सामाजिक प्रभाव

सामाजिक एकतारू संस्कृतिकरण समाजों के बीच एकता और सहयोग को बढ़ावा देता है। जब लोग विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों को समझते हैं और अपनाते हैं, तो यह एक साझा संस्कृति की दिशा में कार्य करता है।

सामाजिक परिवर्तन –संस्कृतिकरण के कारण समाजों में सामाजिक बदलाव आते हैं। उदाहरण के तौर पर, पारंपरिक और आधुनिक जीवनशैली के बीच संतुलन बनाना, सामाजिक मूल्य और परंपराएँ बदल सकती हैं।

सांस्कृतिक विविधता –संस्कृतिकरण में विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क से एक नई सांस्कृतिक विविधता का निर्माण होता है। यह विविधता समाजों में सहिष्णुता और सह–निर्माण को बढ़ावा देती है।

आध्यात्मिक और नैतिक परिवर्तन –संस्कृतिकरण के परिणामस्वरूप, व्यक्ति की आस्थाएँ, नैतिकता और जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल सकते हैं। लोग पारंपरिक धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को बदलकर नए दृष्टिकोण अपना सकते हैं।

सामाजिक परिवर्तन

राजस्थान में सामाजिक परिवर्तन में कई महत्वपूर्ण तत्व हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

शिक्षा –राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हुए हैं, लेकिन अभी भी शहरी और ग्रामीण इलाकों में बहुत अंतर है। महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है, और सरकार ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं, जैसे कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना। ग्रामीण इलाकों में लड़कियों की शिक्षा अभी भी एक चुनौती है।

महिला सशक्तिकरण –महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया है। अब महिलाएं राजनीति, रोजगार, और सामाजिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। हालांकि, राजस्थान में महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा के लिए और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएं और कानून बनाए गए हैं, जैसे कि महिला आरक्षण और महिला उत्पीड़न के खिलाफ कानूनी प्रावधान।

जातिवाद और सामाजिक समावेशन – राजस्थान में जातिवाद का प्रभाव अभी भी मौजूद है, हालांकि यह सामाजिक और राजनीतिक सुधारों के कारण धीरे–धीरे कम हो रहा है। विशेषकर राजस्थान की अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के अधिकारों में सुधार के लिए कई योजनाओं का कार्यान्वयन हुआ है, लेकिन समावेशन के लिए अभी भी बहुत काम बाकी है।

ग्रामीण और शहरी विकास में अंतर – शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की दिशा में राजस्थान ने कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी बुनियादी सुविधाओं की कमी है। शहरी क्षेत्रों में महिलाएं और युवा वर्ग बेहतर शिक्षा और रोजगार के अवसर पा रहे हैं, जबकि ग्रामीण इलाकों में अभी भी गरीबी और सामाजिक असमानता की समस्या बनी हुई है।

राजस्थान में संस्कृतिकरण और सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा में परिवर्तन –महिला साक्षरता दर 2011 की जनगणना के अनुसार, राजस्थान में महिला साक्षरता दर 52.66 प्रतिशत थी। जबकि पुरुषों की साक्षरता दर 80.51 प्रतिशत थी। 2021 की जनगणना के आंकड़े अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं, लेकिन पिछले दशक में महिला साक्षरता दर में सुधार देखा गया है। राज्य सरकार द्वारा महिला शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम चलाए गए हैं, जिनमें बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना और राजस्थान उच्च शिक्षा योजना शामिल हैं।

ग्रामीण महिला साक्षरता –राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर अभी भी शहरी क्षेत्रों से कम है। ग्रामीण इलाकों में यह दर लगभग 45 प्रतिशत के आसपास है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह दर 72–75 प्रतिशत के बीच हो सकती है।

महिला सशक्तिकरण और रोजगार

महिला रोजगार दर 2011 की जनगणना के अनुसार, राजस्थान में महिलाओं की कुल श्रमिक शक्ति लगभग 15.5 प्रतिशत थी, जो कि राष्ट्रीय औसत से कम है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना जैसी योजनाओं ने महिला रोजगार को बढ़ावा दिया है। राजस्थान में महिला श्रमिकों की भागीदारी अब 33–35 प्रतिशत तक पहुंच गई है। महिला नेताओं का योगदान राजस्थान की राजनीति में भी महिला सशक्तिकरण बढ़ा है। राज्य विधानसभा में 2020 में महिलाओं की भागीदारी लगभग 12.5 प्रतिशत थी। इसके अतिरिक्त, महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान पंचायत और स्थानीय निकाय चुनावों में किया गया है।

जातिवाद और सामाजिक समावेशन

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का जनसंख्या अनुपात–राजस्थान की कुल जनसंख्या का लगभग 17.9 प्रतिशत अनुसूचित जातियों से और 13.5 प्रतिशत अनुसूचित जनजातियों से संबंधित है। यह आंकड़ा राजस्थान में जातिवाद और सामाजिक समावेशन की समस्याओं को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए सरकार द्वारा कई कल्याणकारी योजनाएं बनाई गई हैं, जैसे कि विशेष केंद्रीय योजनाएं और राजस्थान राज्य योजना।

बाल विवाह और महिला अधिकार

बाल विवाह का प्रतिशत राजस्थान में बाल विवाह की समस्या एक गंभीर मुद्दा है। राज्य में लगभग 23 प्रतिशत लड़कियां 18 साल से पहले शादी कर लेती हैं। यह राज्य में महिलाओं के अधिकारों और उनकी शिक्षा में एक बड़ी बाधा है। बाल विवाह निषेध अधिनियम (2006) और अन्य सरकारी पहलें इस पर नियंत्रण पाने के लिए प्रभावी कदम हैं, लेकिन अभी भी यह समस्या कुछ हिस्सों में विद्यमान है।

ग्रामीण और शहरी विकास में अंतर

ग्रामीण और शहरी इलाकों के विकास में असमानता राजस्थान के शहरी क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी, और बिजली की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। राजस्थान के शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में प्रति व्यक्ति आय लगभग 50–60 प्रतिशत अधिक है। राज्य सरकार की राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन और ग्रामीण विकास योजनाएं ने ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं के सुधार के लिए कई कदम उठाए हैं, लेकिन विकास में समानता अभी भी एक चुनौती है।

सांस्कृतिक विविधता और पर्यटन

पर्यटन क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी राजस्थान में पर्यटन एक महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्र है, और इसमें महिलाओं की भूमिका बढ़ी है। राज्य में राजस्थानी हस्तशिल्प और कला के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी लगभग 40 प्रतिशत है। इसके अलावा, राज्य में सांस्कृतिक पर्यटन ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के कई अवसर दिए हैं, जैसे कालबेलिया नृत्य और राजस्थानी कढ़ाई जैसे पारंपरिक शिल्पों में।

संस्कृतिकरण के प्रभाव

राजस्थानी संस्कृति और आधुनिकता राजस्थान में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के दौरान पारंपरिक कला और शिल्प में आधुनिक तकनीकों का समावेश हुआ है। उदाहरण के तौर पर, राजस्थानी शिल्प जैसे कठपुतली, मेहंदी डिजाइन, और राजस्थानी संगीत अब वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हो गए हैं। इसके अलावा, पारंपरिक वस्त्र और पहनावे जैसे घाघरा–चोली, लांगरी, साड़ी का डिज़ाइन और पहनावा अब शहरी क्षेत्रों में एक फैशन स्टेटमेंट बन चुका है।

सामाजिक सुरक्षा योजनाएं

महिला सुरक्षा योजनाएं–राजस्थान सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई योजनाएं लागू की हैं, जैसे कि राजस्थान महिला सुरक्षा योजना, जिसके तहत राज्य भर में महिलाओं के लिए हेल्पलाइन सेवाएं, कानूनी सहायता और जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसके अलावा, राज्य में महिला हेल्पलाइन नंबर 1091 को सक्रिय किया गया है, जो महिलाओं को आपातकालीन परिस्थितियों में मदद प्रदान करता है।

संस्कृतीकरण व पश्चिमीकरण में सम्बन्ध

संस्कृतीकरण व पश्चिमीकरण में पारस्परिक सम्बन्ध पाया जाता है; क्योंकि दोनों अवधारणाओं से भारत में जाति–पाति, ऊँच–नीच व छुआछूत की भावनाओं में कमी आई है। इन दोनों से भारत में जाति की कठोरता समाप्त हुई है। इनके प्रभाव से अन्तर्जातीय सम्बन्ध मधुर बने हैं। एक जाति का व्यक्ति दूसरी जाति के व्यक्ति के नजदीक आया है। इससे जातिवाद पर नियन्त्रण लगने की उम्मीदें बढ़ी हैं। इसी प्रकार निम्न जाति के लोगों की स्थिति में सुधार आया है। उनकी स्थिति अधिक मजबूत बनी है। इसके अलावा परिवार का रूप भी परिवर्तित हुआ है। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकाकी परिवारों को स्थान मिला है। भारत में विवाह के कठोर प्रतिबन्ध दूर हुए हैं। अन्तर्जातीय विवाह, प्रेम–विवाह व कानूनी विवाहों को स्थान मिला है। इन नए स्वरूपों के प्रचलन से दहेज प्रथा पर नियन्त्रण होने लगा है। इसी प्रकार स्त्रियों को स्थिति में भी काफी सुधार हुआ है। विवाह से सम्बन्धित समस्याओं का निदान भी होने लगा है।

निष्कर्ष

राजस्थान में संस्कृतिकरण और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया एक जटिल और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया ने राज्य की पारंपरिक संरचनाओं को चुनौती दी है और महिलाओं, शिक्षा, जातिवाद, और सामाजिक समावेशन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। हालांकि, राज्य में अभी भी कई चुनौतियां बनी हुई हैं, लेकिन सांस्कृतिक और सामाजिक सुधारों की दिशा में उठाए गए कदम सकारात्मक संकेत देते हैं। राजस्थान में समाज के विभिन्न वर्गों को समान अवसर और अधिकार मिल रहे हैं, और यह समाज की समृद्धि और विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। राजस्थान में संस्कृतिकरण और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में कई सकारात्मक बदलाव देखे जा रहे हैं, लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण, शिक्षा में सुधार, जातिवाद के खिलाफ संघर्ष और समाज में समावेशन की दिशा में सरकार और समाज दोनों द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। सांस्कृतिक बदलाव और आधुनिकता की प्रक्रिया ने राज्य में विकास को नया रूप दिया है, लेकिन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच असमानता और जातिवाद जैसे मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

संदर्भ गन्थ सूची

1. बर्नार्ड, (2002) राजस्थान की सामाजिक संरचनाएं, समाजशास्त्र पुस्तकालय,नई दिल्ली।
2. सिंह, एस. (2010) राजस्थान में महिला सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन, राजस्थान पब्लिकेशन्स, जयपुर।
3. राजस्थान राज्य महिला आयोग (2020) महिला सशक्तिकरण और कानूनी अधिकार राजस्थान सरकार, जयपुर।
4. यादव, महेन्द्र (2017) राजस्थान में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, जयपुर।
5. कुमार, सुरेश (2015) राजस्थान में महिला सशक्तिकरण : एक सामाजिक विश्लेषण, दिल्ली पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. मिश्रा, सुरेन्द्र (2018) संस्कृतिकरण और समाज : राजस्थान में बदलाव, राजस्थान राज्य पुस्तकालय, जयपुर।
7. राजस्थान सरकार (2019) राजस्थान में महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार, राजस्थान महिला आयोग, जयपुर।
8. रवींद्रनाथ, बी. (2016) भारत में सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन, राजस्थान के संदर्भ में, सोशल साइंस पब्लिशर्स, दिल्ली।

IJCRT